मध्यप्रदेश में प्रमुख व्यावसायिक फसलों का उत्पादन तथा विपणन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंकज कुमार पाण्डेय

भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में, कृषि हमारे देश में केवल जीविकोपार्जन का साधन या उद्योग–धंन्धा ही नहीं है, बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। देश तथा प्रदेश के विदेशी व्यापार मुद्रा अर्जन विभिन्न याजनाओं की सफलता एवं राजनीतिक स्थायित्व भी कृषि पर ही निर्भर है। एक बार स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि ''कृषि को सर्वाशिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रही है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहे है।''

मध्यप्रदेश में कृषि का प्रादुर्भाव, क्रमिक विकास–

मध्यप्रदेश हमेशा से कृषि प्रधान प्रदेश रहा है यहाँ के प्रत्येक दस व्यक्यिों में से लगभग सात व्यक्ति कृषि पर निर्भर है जो खाद्यान का उत्पादन करने मे व्यस्त है। भारत की जनसंख्या के दस व्यक्तियों में से लगभग 6 व्यक्ति कृषि कार्यो में लगे हये है। भारत के लिए कृषि का अत्यंत महत्व है आर्थिक विकास का सम्पूर्ण धूरी कृषि पर आधारित है। मध्य प्रदेश के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का अंशदान वर्ष 1999 में 28 प्रतिशत था जो वर्ष 2006–07 में घटकर 23.88 प्रतिशत रह गया। राज्य में कृषि अभी भी परम्परागत है तथा वर्षा पर अत्यधिक निर्भर है। राज्य में कुल सकल जोत क्षेत्र का मात्र 31.48 प्रतिशत भाग ही सिंचाई से लाभान्वित है। कृषि क्षेत्र का उक्त स्थिति कृषि क्षेत्र में निवेश में वृद्धि करने की महती आवश्यकता को रेखांकित करती है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है तथा आर्थिक गतिविधियों उद्योंगो तथा सेवा क्षेत्र से निकटता से जुड़ी है। वर्ष 2006–07 के दौरान कृषि में 2.80 प्रतिशत के वृद्धि का अनुमान है।

फसल समूहवार उत्पाद मूल्य की तुलनात्मक जानकारी तालिका में दी गई है। वर्ष 2005–06 की तुलना में खाद्यान्न, दलहन के समूह के मूल्य में वर्ष 2006–07 में क्रमशः 21.25 एवं 22.60 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि तिलहन समूह के मूल्य में 1.15 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई है।

तालिका क्रमांक 1

फसलें	फसल समूहवार उत्पादन मूल्य		
	2005–06	2006–07	प्रतिशत वृद्धि
खाद्यान्न	787712	955140	+21.25
दलहन	536775	658111	+22.60
तिलहन	893970	883733	–1.15

स्रोत–आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय मध्यप्रदेश से 2007–08 तक।

वर्ष 2005–06 की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में कुल खाद्यानों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों में ही गतवर्ष से वृद्धि परिलक्षित रही है। इस अवधि में वर्ष 2006–07 में खाद्यानों के कुल उत्पादन मुं 5.33 प्रतिशत की वृद्धि हुई। राज्य

पुनर्गठन के बाद भी मध्यप्रदेश कुल दहलन एवं तिलहन फसलों में तथा चना, मक्का और सोयाबीन के उत्पादन में प्रदेश का 57.42 प्रतिशत अंश है। तथा देश में प्रथम स्थान है। राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, नई दिल्ली द्वारा राज्य को एक बार पुनः कृषि विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु लगातार, आठवें वर्ष पुरस्कृत किया गया। 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 4 प्रतिशत विकास योजना 2007–08 से लागू की गई। वर्ष 2008–09 के दौरान कृषि क्षेत्र में 9.01 प्रतिशत कि वृद्धि हुई।

मध्यप्रदेश का देश में सोयाबीन (देश के कुल उत्पादन का 49.95 प्रतिशत) एवं तिलहन (देश के कुल उत्पादन का 21.34 प्रतिशत) उत्पादन में प्रथम स्थान तथा दाल (देश के कुल उत्पादन का 20.96 प्रतिशत) उत्पादन में दूसरा स्थान है। चना, अलसी, गेहूँ, चावल, ज्वार, गन्ना, कपास, हरहर और सरसों राज्य में उगाई जाने वाली प्रमुख फसले है।

मध्यप्रदेश में यदि प्रमुख फसलों के फसल प्रतिरूप को देखे तो इसे अग्र तालिका में दिखाया गया है।

तालिका क्रमांक 2
प्रमुख फसलों के आधीन क्षेत्र
(हजार हेक्टेयर)

फसल	1990–91	2006–07
चावल	5079	1660
गेहूँ	3.826	3990
दालें	3.924	4110
तिलहन	3673	6090
कपास	602	690

स्रोत–आर्थिक एवं सांख्यिकीय संचालनालय मध्यप्रदेश से 2007–08 तक।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि खाद्यानों फसलों में चावल के क्षेत्र में विशेष कमी हो रही है। वर्ष 190–91 से 2006–07 के मध्य चावल का क्षेत्र 5079 हजार हेक्टेयर से कम होकर 1660 हजार हेक्टेयर रह गया है। वास्तव में कमी का कारण मध्यप्रदेश का विभाजन होना है। वर्ष 2000 में चावल उत्पादन का एक बड़ा क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य में चला गया है इसी अवधि में गेहूँ का क्षेत्र 3826 हजार हेक्टेयर से बढ़कर 3990 हजार हेक्टेयर तथा दालों का क्षेत्र 3924 हजार हेक्टेयर से बढ़कर 4110 हजार हेक्टेयर हो गया हैं। गैर खाद्यान्न फसलों के अधिन विशेष रूप से तिलहन के क्षेत्र में बहुत तेजी से वृद्धि हुई हैं इसका क्षेत्र 1990–91 में 5866 हजार हेक्टेयर हो गया था परन्तु विभाजन उपरान्त यह 2000–01 में 5613 हेक्टेयर हो गया। कपास का क्षेत्र 1990–91 में 605 हजार हेक्टेयर था जो बढ़कर 2006–07 में 640 हजार हेक्टेयर हो गया। भूमि उत्पादकता कम होने के कारण कृषि विकास दरों में काफी उतार–चढ़ाव आया है इसके निम्न कारण है।

(1) सिचाइ के साधनों का सीमित होना, जिससे उपयुक्त समय पर फसलों को पानी नहीं मिल पाता ।

(2) कृषि करने का पिछड़ा तरीका, अच्छे ीज, मशीनों, कीटानुनाशक रासायनिक उर्वरक तथा भूमि संरक्षण आदि के आधुनिक ढंग बहुत सीमित क्षेत्रों में अपनाये गये है मध्यप्रदेश की एक गंभीर समस्यया है प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन होना।

(3) मध्यप्रदेश में परिवहन के साधन भी अन्य राज्यों के तुलना में कम है अतः विस्तृतकृषि प्रदेशों में आधुनिक सुविधाये न पाना और उत्पादन को बाजार तक पहुँचाना एक अन्य समस्या है।

(4) कुछ क्षेत्रों में कंकरीली आर छिछली मिट्टी होने से भी उत्पादन कम है।

(5) उपयुक्त समय पर फसलों को पानी नहीं मिल पाना।

कृषि की वर्तमान दशा–

मध्यप्रदेश की प्रमुख उपजे मूंगफली, अरहर, तिलहन, कपास, मेस्टा,(जूट के समान रेशम पैदा करने वाला पौधा) सनई, गन्ना और सोयाबीन है । फल जैसे–पपीता, केला, छोटे अनाज जैसे–सांवा रागी, राला, काफुन तथा दालें जैसे– बरबटी मसालें जैसे– मिर्च, सोंठ आदि भी गौठा फसलों के रूप में होते है यहां तरकारियां भी होती हैं। देश भर में जितना सोयाबीन उगाया जाता है उसका 82.1 प्रतिशत भाग अकेले मध्यप्रदेश में उगाया जाता है। राजस्थान एवं महाराष्ट्र का स्थान इसके बाद है। सोयाबीन के कारण म.प्र. बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा कमा रहा है। म.प्र. को सोया राजधानी भी कहा जाता है। फसलों के आधार पर म.प्र. को अग्रणी कृषि क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता ह।

सोयाबीन–

छिन्दवाड़ा, सिवनी, नरसिहंपुर, इन्दौर, धार, उज्जैन, रतलाम, साजापुर, गुना, भोपाल, एवं होंशगाबाद इसका उत्पादन करने वाले प्रमुख क्षेत्र है। इन्दौर जिले में 15.16 क्विटंल प्रति हेक्टेयर सोयाबीन उत्पादन हुआ है।

ज्वार क्षेत्र–

पश्चिमी मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी तथा गुना।

गेहूँ ज्वार प्रदेश–

इसका विस्तार लगभग बुन्देलखण्ड के पठार तथा मालवा के मध्य भाग पर है तथा पश्चिमी मुरैना, ग्वालियर, भिण्ड, विदिशा, भोपाल, रायसेन, सागर, नरसिंहपुर, दमोह, टीकमगढ़, पन्ना सतना और रीवा जिले आते है। कपास गेहूँ क्षेत्र मुख्यतः रतलाम, झाबुआ, धार और खरगौन जिले में है।

मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन व कारक–

मध्यप्रदेश की प्रमुख फसलो में गेहूँ, चावल, ज्वार, दाल, तिलहन, कपास आदि है इन सभी का उत्पादन का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

गेहूँ–

गेहूँ मध्यप्रदेश की सबसे महत्वपूर्ण फसल ह। मध्यप्रदेश म गेहूँ रवी की फसलों के सबसे अधिक क्षेत्र में उत्पादित होती है।

मध्यप्रदेश में गेहूँ का प्रादेशिक विवरण असमान है। राज्य में मालवा का पठार गेहूँ उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख क्षेत्र है। उसके बाद सीहोर, विदिशा और रायसेन जिलों का स्थान है। पूर्व की ओर सागर, दमोह, जबलपुर जिलों का तीसरा और उत्तर की ओर पन्ना, सतना और रीवा का पठार तथा दक्षिण में नर्मदा की घाटी गेहूँ उत्पादन की दृष्टि से उल्लेखनीय है। उत्तर पश्चिमी म.प्र. में शिवपुरी, भिण्ड और ग्वालियर गेहूँ उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इन क्षेत्रों में सकल बोया क्षेत्र का 30.35 प्रतिशत भाग पर गेहूँ उत्पादित होता है। मध्यप्रदेश में हरित क्रांति से सर्वाधिक लाभ गेहूँ उत्पादन में ही हुआ है। 2000–01 में 38.87 लाख टन गेहूँ उत्पादन हुआ जो मध्यप्रदेश के पुनर्गठन में रहा। 2000–01 में राष्ट्रीय स्तर पर गेह् के प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 1506 किलोग्राम रही है। गेहूँ के क्षेत्रोच्छादन में वर्ष 2005–06 की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में 12.62 प्रतिशत कि वृद्धि हुई एवं क्षेत्रफल गत वर्ष के 3784.70 हजार हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2006–07 में 4262.38 हजार हेक्टेयर हो गया 26.58 प्रतिशत की वृद्धि हुइ। उत्पादन गत वर्ष 6199.74 हजार मिट्रिक टन से बढ़कर वर्ष

2006–07 में 7847.82 हजार मीट्रिक टन हो गयी।

वर्ष 2008–09 की अपेक्षा 2009–10 में 4458.99 हजार हेक्टेयर हो गया, लेकिन इसी अवधि में गेहूँ के क्षेत्रफल में वृद्धि परिलक्षित हुई है और उत्पादन गत वर्ष के 7279.58 हजार मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2009–10 में 8410 हजार मीट्रिक टन होना अनुमानित है।

चावल–

अविभाजित मध्यप्रदेश कि यह सबसे महत्वपूर्ण फसल थी । इसका प्रमुख क्षेत्र पूर्वी म.प्र. था जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य के अन्तर्गत शामिल है। इसे धान का कटोरा नाम से पुकारा जाता है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में चावल उत्पादन बहुत कम हो गया है। इस फसल के लिए आवश्यक औसत वार्षिक वर्षा 100–125 सेमी. है। दक्षिणी पूर्वी मध्यप्रदेश सिवनी एवं मण्डला जिलों में चावल प्रमुख फसल है इसके अतिरिक्त बालाघाट, रीवा, सतना, दमोह, जबलपुर आदि जिले विशेष है। चावल के क्षेत्ताच्छादन में वर्ष 2005–06 की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में 1674.01 हजार हेक्टेयर हो गया । धान के क्षेत्ताच्छादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 7.20 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई एवं क्षेत्रफल गत वर्ष के 1716.76 हजार हेक्टेयर हो गया। धान के अन्तर्गत क्षेत्रफल में वृद्धि के फलस्वरूप वर्ष 2008–09 की तुलना में वर्ष 2009–10 में धान के उत्पादन गत वर्ष के 1577.96 हजार मीट्रिक टन से घटकर वर्ष 2009–10 में 1260. 60 हजार मीट्रिक टन होना अनुमानित है।

ज्वार–

ज्वार मध्यप्रदेश की प्रमुख खाद्यान फसल है। इसका राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान हैं। क्षेत्रफल तथा उत्पादन की दृष्टि से गेहूँ के बाद ज्वार का प्रमुख स्थान है। मध्यप्रदेश में ज्वार खरीफ की फसल है। इस दृष्टि से महाराष्ट्र के बाद मध्यप्रदेश का दूसरा स्थान है और भारत में चौथा स्थान है। साधारण अधिक वर्षा के क्षेत्रों में ज्वार नहीं होती है विशेष रूप में हल्की दोमट मिट्टी इसके लिए उपयुक्त है किन्तु काली मिट्टी में भी होती है। मध्यप्रदेश में वर्ष 2000–01 में ज्वार का उत्पादन 4.78 लाख मीट्रिक टन हुआ है। वर्ष 2006–07 में विसुद्ध उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत उत्पादन का क्षेत्रफल 5.25 लाख हेक्टेयर का क्षेत्रफल जबकि वर्ष 2007–08 में ज्वार उत्पादन का क्षेत्रफल 4.75 लाख हेक्टेयर था।

मक्का–

मक्का खरीफ की फसल है। यह उष्ण –आर्द्र क्षेत्रों में उत्पादित को जाती हैं। अर्द्र शुष्क व असिचित भागों में वर्षाकाल में ही इसे उत्पादित किया जाता ह। म.प्र. में इसे जून–जुलाई में बोया जाता है। और अक्टूबर–नवम्बर में काट लिया जाता है। राज्य में मक्का का उत्पादन उज्जैन, मंदसौर, नीमच, रतलाम, गुना, धर, राजगढ़, शाजापुर, और इन्दौर जिलों में होता है।

मक्का के क्षेत्राच्छादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 3.01 प्रतिशत की कमी हुई एवं क्षेत्रफल गतवर्ष के 837.63 हजार हेक्टेयर से घटकर वर्ष 2009–10 में 812.45 हजार हेक्टेयर रह गया। मक्का का क्षेत्रफल में कमी होने के उपरान्त भो मक्का के उत्पादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 8.25 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई एवं उत्पादन गतवर्ष के 1139.60 हजार मीट्रिक टन होना अनुमानित है।

तालिका क्रमांक 3

दलहनी फसलों का उत्पादन (हजार मिट्रिक टन में)

फसले	2006. 07	07.08	08.09	09.10 अनुमानित
अरहर चना	123.50 2556. 67	197.16 1925. 77	247.35 2814. 67	308.00 3304.11
कुल दलहन	3351. 82	2674. 50	3709. 50	4273.10

स्रोत–मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2009

तालिका क्रमांक 4

प्रमुख खाद्य फसलों का उत्पादन (हजार मीट्रिक टन में)

फसले	2006. 07	07.08	08.09	09.10 अनुमानित
धान मक्का गेंहूँ	2094. 00 853. 82 7847. 872	1332. 041119. 04 6736.58	1577. 96 1139. 60 7279. 58	1260.60 1045.20 8410.00

स्रोत–मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण वर्ष 2009

चना–

चना म.प्र. की महत्वपूर्ण उपज है। इसका दाल एवं खाद्यानों के रूप में प्रचलित है। चना को फसल अक्टूबर में बोई जाती है तथा मार्च–अप्रैल में काट ली जाती है। चना को बोते समय नमी की आवश्यकता होती है। तत्पश्चात सूखा मौसम भी लाभप्रद रहता है। राज्य में चना उत्पादक जिलों में उज्जैन, मन्दसौर, नीमच, गुना, शाजापुर, विदिशा, देवास, रतलाम, झाबुआ, नरंसिहपुर, जबलपुर, टीकमगढ़, भिण्ड, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, सिहोंर, होशंगाबाद, छिदंवाडा है। मध्यप्रदेश का चना उत्पादक राज्यों में दूसरा स्थान है। वर्ष 2205–06 की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में 7.52 प्रतिशत की वृद्धि आँकी गई है चना के क्षेत्राच्छादन में वर्ष 2008–09I की अपेक्षा वर्ष 2009–10 मुें 4.61 प्रतिशत की वृंद्धि आंकी गई और क्षेत्रफल गत वर्ष 2875.14 हजार हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2009–10 में 3007.73 हजार हेक्टेयर हो गया है। चने के उत्पादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 17.39 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानि है।

अरहर–

अरहर राज्य की प्रमुख दाल है। इसे तुअर के नाम से पुकारा जाता है। इसके उत्पादन में म.प्र. का प्रथम स्थान है। तुअर वर्ष के प्रारम्भ में बोई जाती है। ज्वार तो सितम्बर–अक्टूबर में काट ली जाती हैं किन्तु तुअर कि सम्पूर्ण फसल शीतकाल के मौसम में खेतों में खड़ी रहती है। इसे मार्च–अप्रैल में काटा जाता है। मध्यप्रदेश में तुअर उत्पादन के प्रमुख जिलो में भिण्ड, खण्डवा, बुरहारनपुर, ग्वालियर, मुरैना, सागर, दमोह, देवास, धार, झाबुआ, इन्दौर, रीवा, सतना, सिहोर, रायसेन, छतरपुर, सीधी, शहडोल, अनुपपुर, उमरिया आदि।

अरहर क्षेत्राच्छादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 4.75 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई एवं क्षेत्रफल गत वर्ष के 310.11 हजार हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2009–10 में 324. 87 हजार हेक्टेयर हो गया। अरहर के उत्पादन में वर्ष 2008–09 की अपेक्षा वर्ष 2009–10 में 24.52 प्रतिशत की वृद्धि आकीं गई और उत्पादन गत वर्ष के 247.35 हजार मीट्रिक टन से बढ़कर 308.00 हजार मीट्रिक टन होना अनुमानित है।

तिलहन–

मध्यप्रदेश में तिलहन फसलों में अन्तर्गत जहाँ कुल तिलहनी फसलों का क्षेत्रफल में वर्ष 2005–06 से वर्ष 2006–07 में मात्र 1.16

प्रतिशत की वृद्धि हुई वही इसी अवधि में तिलहनी फसलों के उत्पादन में गतवर्ष से वर्ष 2006–07 में 33 प्रतिशत की कमी हुई। राज्य में पैदा होने वाली प्रमुख तिलहन निम्नलिखित है।

(क) सोयाबीन–

सोयाबीन उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है देश का 54 प्रतिशत से अधिक सोयाबीन मध्यप्रदेश में होता है। अतः इसे सोयाबीन प्रदेश कहते है। सोयाबीन चीन की मूल फसल है। इसका उत्पादन अधिकतर कोरिया, जापान, चीन और मंगोलिया में होता है। मध्यप्रदेश में सोयाबीन की कृषि का शुभारम्भ वर्ष 1964–65 में हुआ था। तभी से यहां सोयाबीन के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र और उत्पादन में वृद्धि होती जा रही है।

वर्ष 1983 में उज्जैन में एशिया के सबसे बड़े सोयाबीन संयन्त्र की स्थापना की गई है। सिवनी के मालवा मे सहकारी क्षेत्र का सबसे बड़ा कारखाना भी स्थापित किया गया है। इन्दौर में राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसन्धान केन्द्र कार्यरत है। राज्य में सोयाबीन के विपुल उत्पादन को ध्यान में रखते हुए निगम ने भापाल में सोया बिस्कुट बनाने का कारखाना स्थापित करने का विचार बनाया हैं। शासन द्वारा फसल को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश को सोयाबीन राज्य घोषित किया गया है।

सोयाबीन को खेती वर्ष 2001–02 में सोयाबीन का कुल उत्पादन 52 लाख मीट्रिक टन होने से सोयाबीन के क्षेत्राच्छादन वर्ष 2005–06 की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में 2.20 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई जबकि इसी अवधि में सोयाबीन के उत्पादन में वर्ष की अपेक्षा वर्ष 2006–07 में 0.5 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई और उत्पादन गतवर्ष 4813.92 हजार मीट्रिक टन घटकर वर्ष 2006–07 में 4739.22 हजार मीट्रिक टन रह गया। वर्ष 2008–09 की अपेक्षा 2009–10 में 2.73 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई और क्षेत्रफल गतवर्ष के 5295.15 हजार हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2009–10 में 5439.84 हजार हेक्टेयर हो गया। इसी अवधि में सोयाबीन के क्षेत्रफल के साथ–साथ उत्पादन गतवर्ष 5923.99 हजार मीट्रिक टन में बढ़कर वर्ष 2009–10 में 6406.30 हजार मीट्रिक टन अर्थात् 8.14 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।

(ब) अलसी–

अलसी मध्यप्रदेश की रबी की महत्वपूर्ण फसल है यह गेहूँ चना और जौ के साथ मिलाकर बोयी जाती है अलसी सभी की मिट्टी में होती है। अलसी का उत्पादन जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, मण्डला, सागर और दमोह है। इसका प्रमुख उत्पादन क्षेत्र रीवा संभाग है।

(स) तिल–

यह खरीफ एवं रवी मध्यतिल फसल पैदावार किया जाता है। सितम्बर में आरम्भ किया जाता है जनवरी में काट लिया जाता है। जबकि खरीफ की फसल की बुआइ जुलाई से करते है और अक्टूबर एवं नवम्बर में कटाई की जाती है। छतरपुर, टीकमगढ़, सीधी, शहडोल, शिवपुरी, मण्डला, जबलपुर, पूर्वी निमाड़ और सिवनी जिलों में होती है जबकि रबो की फसल सिहोर रायसेन, होशंगाबाद एवं नरसिंहपुर जिलों में की जाती है।

(ब) मूँगफली–

मूँगफली खरीफ की फसल है जो तेल और भोज्य पदार्थ दोनों के लिए उगायी जाती है मूँगफली का उत्पादन मालवा के पठार एवं नर्मदा घाटी के नीचे हिस्से में होता है। मंदसौर, नीमच, खरगौन और चार जिलों इसकी खेती के प्रमुख क्षेत्र है। कुछ वर्ष पूर्व यह 6 माह में तैयार होने वाली फसल थी, लेकिन कृषि

प्रौद्योगिक के विकास से 90 से 100 दिनों की नई किस्म तैयार कर ली गई है।

निष्कर्ष–

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है यहाँ की कृषि न सिर्फ महत्वपूर्ण योगदान देती है, प्रदेश की जनता का एक बढ़ा भाग भी कृषि अथवा कृषि सम्बधी अन्य उद्योग के माध्यम से अपना जीतिकोपार्जश्न चला रही हैं। राज्य की 73.54 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में से है। राजय के सफल घरेलू उत्पादन में कृषि का 28 प्रतिशत भाग है। जैसे–जैसे उद्योग व सेवा क्षेत्र का विकास हो रहा है वैसे–वैसे कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा कम हो रहा है। राज्य में लगभग 49 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है। वर्ष 2005–06 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 119 लाख हेक्टेयर रहने का अनुमान था। इस प्रकार, मध्यप्रदेश को अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ–

1. अग्रवाल के.एम.–भारत में कृषि का इतिहास, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, जयपुर, 1997
2. श्रीवास्तव, प्रो. ओ.एस.–विकास एवं नियोजन का अर्थशास्त्र, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, वर्ष 2008
3. गौड़ श्यामलाल–कृषि परियोजना ऋण विधि और व्यवहार, हिमालय पब्लिसिंग हाउस प्राइवेट लिमि. मुम्बई, वर्ष 2008
4. चौहान, जीतन सिंह–रीवा राज्य दर्पण, रीवा दरबार से प्रकाशित स्टेण्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद, 2007
5. जैन, पी.सी. एवं जैन रेणुका–विपणन प्रबन्ध, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005
6. धींगरा, ईश्वर–भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द, एण्ड कं., नई दिल्ली, 1987
7. कुलश्रेष्ठ, आर. एस.–औद्योगिक अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकशन, आगरा,1998
8. सिंह, राजेन्द्र–भारतीय अर्थव्यवस्था में गरीबी उन्मूलन की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1989

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com